पशुओं में जेर रूकने की समस्या और उपचार

डा0 शिव प्रसाद एवं डा0 एस0 सी0 त्रिपाठी
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय
गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय,पन्तनगर– 263145 (ऊधमसिंह नगर)

साधारणतः पशुओं में ब्याने के बाद लगभग4 से 5 घंटे में जेर स्वतः बाहर निकल आती है। लेकिन कभी–कभी ऐसा देखने में आता है कि ब्याने के बाद पशुओं में कई घंटों तक जेर नहीं निकलती जो कि बच्चेदानी के अंदर अनेक प्रकार के विकार उत्पन्न कर देती है। इससे दुग्ध उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। यदि जेर ब्याने के 12 घंटे तक स्वतः नहीं निकलती तभी इसे जेर का रूकना माना जाता है।

कारण

1. खुराक में विटामिन ए तथा आयोडीन की कमी होना।
2. गर्भ के समय जीवाणुओं, विषाणुओं तथा विभिन्न प्रकार के कवकों का संक्रमण।
3. समय से पहले गर्भपात का होना।
4. गर्भ के समय प्रोजेस्टेरान हार्मोन की कमी होना।
5. बच्चेदानी में कम गति से स्पंदन होना।
6. बच्चेदानी का बायें या दायें मुड़ जाना।
7. गर्भ में एक से अधिक बच्चे होना।
8. बच्चे का सर्वाधिक बड़ा आकार होना।
9. बच्चे देते समय मादा पशु को अधिक थकान होना।
10. पशुओं के अंदर ईस्ट्रोजन तथा आक्सीटोसिन हार्मोन की कमी होना।

लक्षण

1. बच्चेदानी से बाहर जेर का लटकना देखा जा सकता है।
2. जेर के टुकड़े गर्भाशय के अंदर होने पर हाथ डालकर महसूस किये जा सकते है।
3. पशु द्वारा पेट पर बार–बार पैर मारना तथा दर्द का अनुभव करना।
4. बुखार होना तथा चारा–दाना त्यागना।
5. दूध की मात्रा एकदम कम होना।
6. बच्चेदानी से बाहर दुर्गंध का आना।
7. समय ज्यादा होने पर मवाद का बाहर निकलना।
8. पशु का जेर रूकने के कारण बैचेनी होना।
9. पशु का बार–बार उठना व बैठना।
10. पशु का सुस्त होना तथा आसपास के वातावरण की तरफ आकर्षित न होना।

उपचार

1. जेर का समय से न निकलने की अवस्था में बच्चेदानी में हाथ डालकर देख लेना चाहिए। यदि जेर आसानी से निकल जाये तभी उसे निकालना चाहिए। अत्यधिक बल का प्रयोग नहीं करना चाहिए। क्योकि यह गर्भाशय मे अनेक विकार उत्पन्न कर देता है।

2. आक्सीटोसिन हार्मोन की 50 अंर्तराष्ट्रीय इकाई 500मि.ली. ग्लूकोज में मिलाकर नस द्वारा धीमी गति से पशुचिकित्सक की सलाह पर देनी चाहिए लेकिन यदि जेर को रूके 48 घंटे से अधिक हो गया हो तो इसका प्रयोग नही करना चाहिए।
3. ईस्ट्रोजन हार्मोन 20–35 मि.ग्रा.पशु को मांसपेशियों में देना चाहिए या ईस्ट्रोडियोल 1–4 मि.ग्रा मांसपेशियों में भी दिया जा सकता है। उसके बाद ही आक्सीटोसिन हार्मोन का प्रयोग करना चाहिए।
4. प्रोस्टाग्लैन्डिन हार्मोन की 25 मि.ग्रा. मात्रा अंतः पेशियों में देने पर जेर निकलने में आसानी होती है।
5. टेट्रासाइक्लीन, आक्सीटेट्रासाइक्लीन, क्लोरटेट्रासाइक्लीन या फ्यूरासीन 2–3 ग्राम बच्चेदानी में 5 दिन तक लगातार डालें।
6. आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग मुखद्वार द्वारा भी लाभकारी होता है। जैसे यूटरोटोन, यूटरीफिट, इनवोलोन आदि में से कोई एक की पहले दिन 200 मि.ली.तथा 100 मि.ली. अगले 3 दिनों तक पिलायें अथवा स्थानीय उपलब्धतानुसार बाँस की लगभग 2 कि.ग्रा. हरी पत्तियां ब्याने के उपरान्त खिलायें।
7. जेर के बाहर निकल जाने पर बच्चेदानी की सफाई करना अत्यधिक आवश्यक है इसके लिए लाल दवा (पोटेशियम परमैगनेट) का 1:1000 घोल पानी में बनाकर बच्चेदानी की सफाई कर देनी चाहिए।
8. जेर रूके वाले पशु में दूध की मात्रा कम हो जाती है अतः खनिज पदार्थ जैसे कि कैल्शियम, फास्फोरस आदि उचित मात्रा में पशु को देना चाहिए।

1. अक्सर देखा गया है कि जेर रूके पशु में मैट्राइटिन या गर्भाशय में सूजन आ जाती है। उसका उचित इलाज कराना चाहिए।
2. ब्याने के उपरान्त अच्छी प्रकार सफाई करके पशु का दुहान कर लें तथा बच्चे को भी खीस पिला दें।

सभी कार्य पशुचिकित्सक की सलाह पर ही करने चाहिए।